सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुण्डरीकेक्षणं
हृत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवर्तितमसौ श्रीवल्भार्कोऽवतात्।।

श्री भारतमार्तण्डमहाभागाः।

निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्रीमन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।

प्रति १,००,००० *{न्योछावर ६/- रुपया}*

❀ निवेदन ❀

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामितिलकायित श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के अन्त में श्रीमहाप्रभु जी के उपदेश प्रकाशित किये हैं। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मंगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष

विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.shrinathjee.com के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

वल्लभाब्द ५३४	**चैत्र शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	२३	मार्च, सन् २०१२ संवत्सरोत्सवः। इष्टिः।
२	शनि	२४	
३	रवि	२५	गणगौरी।
४	सोम	२६	
५	मंगल	२७	
५	बुध	२८	
६	गुरू	२९	श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव। (१६१५)
७	शुक्र	३०	
८	शनि	३१	
९	रवि	१	अप्रेल, रामनवमी व्रतम्।
१०	सोम	२	रामनवमी व्रत की पारणा।
११	मंगल	३	कामदा एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई।
१२	बुध	४	
१३	गुरू	५	
१५	शुक्र	६	

वल्लभाब्द ५३४-५३५	**वैशाख (गु.चैत्र) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	७	इष्टिः।
२	रवि	८	
३	सोम	९	
४	मंगल	१०	
५	बुध	११	
७	गुरू	१२	श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सवः।
८	शुक्र	१३	मेष संक्रान्ति। सतुआ भोग संध्या में पुण्यकाल आज मध्याह्न सूं सूर्यास्त पर्यन्त तामे भी सूर्यास्त के पास के २ घन्टा (४ बजके ५४ मिनट से लेकर ६ बजके ५४ मिनट तक) अति मुख्य पुण्यकाल है। अबके ये संक्रान्ति आज रात्रि के ७ बजके २१ मिनट पर बैठे है। तासू पुण्य काल आज मान्यो जायगो। श्री कूं भोग धरे पीछे दान श्राद्धादि करने ।
९	शनि	१४	
१०	रवि	१५	पाँच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत।
११	सोम	१६	श्री वल्लभाचार्यजी (श्री महाप्रभुजी) को उत्सव। (१५३५) श्री वल्लभाब्द ५३५ को प्रारम्भ।
१२	मंगल	१७	वरूथिनी एकादशी व्रतम्
१२	बुध	१८	
१३	गुरू	१९	
१४	शुक्र	२०	
३०	शनि	२१	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३५	**वैशाख शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	२२	
२	सोम	२३	
३	मंगल	२४	अक्षय तृतीया चन्दन यात्रा त्रेतायुगादि जलकुम्भ दानम्।
४	बुध	२५	
५	गुरू	२६	
६	शुक्र	२७	
७	शनि	२८	तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (१६९०)
८	रवि	२९	
९	सोम	३०	
१०	मंगल	१	मई
११	बुध	२	मोहिनी एकादशी व्रतम् ।
१२	गुरू	३	
१३	शुक्र	४	
१४	शनि	५	श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम् ।
१५	रवि	६	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३५	**ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
२	सोम	७	चार स्वरूप को उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत।
३	मंगल	८	
४	बुध	९	
५	गुरू	१०	
६	शुक्र	११	
७	शनि	१२	
८	रवि	१३	
९	सोम	१४	
१०	मंगल	१५	
११	बुध	१६	अपरा एकादशी व्रतम्।
१२	गुरू	१७	
१३	शुक्र	१८	
१४	शनि	१९	
३०	रवि	२०	ग्रस्तोदित कंकणाकृति खण्डग्रास सूर्यग्रहण भारत वर्ष के पूर्वी भाग में दृश्य होयगो। नाथद्वारा में अदृश्य। निर्णय पृ. ३१ ।

वल्लभाब्द ५३५	**ज्येष्ठ शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	२१	इष्टिः।
१	मंगल	२२	
२	बुध	२३	
३	गुरू	२४	आज सूं ले के आषाढ़ कृष्ण ३ गुरू पर्यन्त सूर्य कूं रोहिणी नक्षत्र है ता सूं इन दिनन में श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है।
४	शुक्र	२५	
५	शनि	२६	श्री के नाव को मनोरथ।
६	रवि	२७	
७	सोम	२८	
८	मंगल	२९	
९	बुध	३०	
१०	गुरू	३१	श्री गंगादशमी दशहरा श्री यमुनाजी को उत्सव माने हे।
११	शुक्र	१	जून, निर्जला एकादशी व्रतम्।
१३	शनि	२	तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव। (१९००)
१४	रवि	३	
१५	सोम	४	स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो।

वल्लभाब्द ५३५	**आषाढ़ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	५	ज्येष्ठाभिषेक (स्नान यात्रा) इष्टिः।
२	बुध	६	
३	गुरू	७	
५	शुक्र	८	
६	शनि	९	
७	रवि	१०	
८	सोम	११	
९	मंगल	१२	
९	बुध	१३	
१०	गुरू	१४	
११	शुक्र	१५	योगिनी एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	१६	
१३	रवि	१७	
१४	सोम	१८	
३०	मंगल	१९	तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (१८२५)

वल्लभाब्द ५३५	**आषाढ़ शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	२०	इष्टिः।
२	गुरू	२१	
३	शुक्र	२२	रथयात्रा।
४	शनि	२३	
५	रवि	२४	श्री द्वारकाधीशजी को पाटोत्सव।
६	सोम	२५	कसूंभा छट्ठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी विराजे सो उत्सव तथा तिलकायित श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराजश्री गादी विराजे।(२०५७)
७	मंगल	२६	
८	बुध	२७	
९	गुरू	२८	
१०	शुक्र	२९	
११	शनि	३०	देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्यनियमारम्भः ।
१२	रवि	१	जुलाई
१३	सोम	२	
१५	मंगल	३	पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्यनियमारम्भः एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य।

वल्लभाब्द ५३५	**श्रावण (गु. आषाढ़) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	४	इष्टिः।
२	गुरू	५	हिन्दोलारम्भः।
३	शुक्र	६	
४	शनि	७	श्री चन्द्रमाजी को पाटोत्सवः।
५	रवि	८	
६	सोम	९	
७	मंगल	१०	
८	बुध	११	जन्माष्टमी की बधाई
९	गुरू	१२	
१०	शुक्र	१३	तिलकायित श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज को उत्सव हांडी उत्सव। (१७६३)
११	शनि	१४	
१२	रवि	१५	कामिका एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	१६	
१३	मंगल	१७	
१४	बुध	१८	
३०	गुरू	१९	हरियाली अमावस। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३५	**श्रावण शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	२०	
२	शनि	२१	
३	रवि	२२	ठकुरानी तीज मधुस्रवा।
४	सोम	२३	
५	मंगल	२४	नाग पंचमी।
७	बुध	२५	
८	गुरू	२६	
९	शुक्र	२७	सात स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
१०	शनि	२८	
११	रवि	२९	पुत्रदा एकादशी व्रतम् पवित्रारोपणं प्रातः श्रृंगार में ७ बजके ३३ मिनिट पूर्व याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरायवे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत।
१२	सोम	३०	गुरुन कूं पवित्रा धरावने।
१३	मंगल	३१	
१४	बुध	१	अगस्त, श्री विट्ठलेशरायजी महाराज को उत्सव। (१६५७)
१५	गुरु	२	रक्षा बन्धनं प्रातः श्रृंगार में ८ बजके ५९ मिनिट पूर्व गुसांईजी के ज्येष्ठ पुत्र श्रीगिरधरजी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव (१६३२) आपस्तम्ब हिरण्यकेशीय बौधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति ऋग्वेदीन, सर्व यजुर्वेदीन तथा अथर्ववेदीनं की श्रावणी। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३५	**शुद्ध भाद्रपद (गु. श्रावण) कृष्णपक्षः**	विक्रमाब्द २०६९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	३	इष्टिः। गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज को उत्सव। हेमहिन्दोला (१९१७)
२	शनि	४	कज्जली तीज, तीज का क्षय होयवे सूं आज।
४	रवि	५	हिन्दोला विजय।
४	सोम	६	
५	मंगल	७	
६	बुध	८	
७	गुरू	९	शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णुस्वामि प्राकट्योत्सव।
८	शुक्र	१०	जन्माष्टमी व्रतम्।
९	शनि	११	नन्दमहोत्सव।
१०	रवि	१२	
११	सोम	१३	अजा एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	१४	
१३	बुध	१५	
१४	गुरू	१६	काका वल्लभजी को उत्सव। (१७०३)
३०	शुक्र	१७	कुश गृहणी अमावस।

वल्लभाब्द ५३५	**अधिक भाद्रपद शुक्लपक्षः**	विक्रमाब्द २०६९	
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	१८	इष्टि : । पुरूषोत्तममास को आरम्भः । कास्य के पात्र में ३३ पूवा अथवा पक्वान्न भोगधर के जाको प्रतिदिन दान या मास में प्रशस्त है। नित्य न बन सके तो हूं प्रथम दिवस तथा आगे द्वादशी मे लिखे ५ पर्वन में अवश्य करनो दान के श्लोक पृ. २९ पर लिखे है। पुरूषोत्तम मास सम्बन्धी भोग स्नान दान आदि नियमन को आरम्भ या मास में नित्य सेवा को विशेष नियम तथा भगवन्नाम जप गीता भागवतादिपाठ यथा शक्ति स्नान दान ब्राह्मण भोजनादि जो बन सके सो कछु भी सत्कृत्य नित्य अवश्य करनो ।
२	रवि	१९	
३	सोम	२०	
४	मंगल	२१	
५	बुध	२२	
६	गुरू	२३	
७	शुक्र	२४	
८	शनि	२५	या दिन वैधृति है तांसू ये भी अतिमुख्य पुण्य समय है तासूं कछु भी श्री के मनोरथ दानादि अवश्य करनो ।
१०	रवि	२६	
११	सोम	२७	कमला एकादशी व्रतम् दोनों एकादशी में नित्य पात्रदान दुधघर की अथवा फलाहार की वस्तु सो करनो चाहिए। दान नित्य न बन सके तो हूं दोऊ द्वादशी, पूर्णिमा, अमावस्या व्यतीपात इन पाँच पर्वन में अवश्य ही करनो। इन पाँच पर्वन में गोपूजन को बड़ो ही फल है।
१२	मंगल	२८	पुण्य दिनम
१३	बुध	२९	
१४	गुरू	३०	
१५	शुक्र	३१	पुण्य दिनम्

वल्लभाब्द ५३५	अधिक भाद्रपद कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	१	सितम्बर, इष्टिः।
२	रवि	२	
३	सोम	३	
४	मंगल	४	
५	बुध	५	
६	गुरू	६	
७	शुक्र	७	
८	शनि	८	
८	रवि	९	
९	सोम	१०	या दिन व्यतीपात हे तासूं यह भी पुण्य दिन है।
१०	मंगल	११	
११	बुध	१२	कमला एकादशी व्रतम्
१२	गुरू	१३	पुण्य दिनम् ।
१३	शुक्र	१४	
१४	शनि	१५	
३०	रवि	१६	इष्टि : । पुण्य दिनम् । पुरूषोत्तममास की समाप्तिः राधाष्टमी की बधाई ।

वल्लभाब्द ५३५	शुद्ध भाद्रपद शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
२	सोम	१७	सामवेदीन की श्रावणी।
३	मंगल	१८	
४	बुध	१९	गणेश चतुर्थी।
५	गुरू	२०	ऋषि पंचमी। द्वितीय स्वरूपोत्सव।
६	शुक्र	२१	तिलकायित श्री विट्ठलेशजी महाराज को उत्सव।(१७४४)
७	शनि	२२	
८	रवि	२३	राधाष्टमी ।
९	सोम	२४	
१०	मंगल	२५	
११	बुध	२६	परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी) नवलक्ष ग्रन्थकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव। (१७१४) वामन द्वादशी विष्णु श्रृंखल योग।
१२	गुरू	२७	
१३	शुक्र	२८	
१४	शनि	२९	
१५	रवि	३०	इष्टिः। सांझी को आरम्भः। श्राद्धपक्ष का आरम्भ ताको निर्णय पृष्ठ (३०-३१) पर लिख्यो है।

वल्लभाब्द ५३५	**आश्विन (गु. भाद्रपद) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	१	अक्टूबर
२	मंगल	२	
३	बुध	३	
४	गुरू	४	
५	शुक्र	५	श्री हरिरायजी को उत्सव। (१६४७)
६	शनि	६	
७	रवि	७	
८	सोम	८	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरूषोत्तमजी को उत्सव। (१५८७)
९	मंगल	९	
१०	बुध	१०	
११	गुरू	११	इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)।
१२	शुक्र	१२	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव। (१५६७)
१३	शनि	१३	श्री गुसांईजी के तीसरे लालजी श्रीबालकृष्णजी को उत्सव। (१६०६)
१४	रवि	१४	
३०	सोम	१५	सोमवती अमावस। सर्वपितृ अमावस, कोटकी आरती और सांझी की समाप्ति।

वल्लभाब्द ५३५	**आश्विन शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	१६	इष्टिः। मातामह श्राद्ध। नवरात्रारम्भः।
२	बुध	१७	
३	गुरू	१८	श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) (१८५४) चतुर्थी को क्षय होयवे सूं आज
५	शुक्र	१९	
६	शनि	२०	सरस्वती पूजनारम्भः।
७	रवि	२१	
८	सोम	२२	
९	मंगल	२३	सरस्वती विसर्जनम्
१०	बुध	२४	दशहरा (विजया दशमी) श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव।
११	गुरू	२५	पाशांकुशा एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	२६	
१३	शनि	२७	श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः।
१४	रवि	२८	
१५	सोम	२९	शरद पूर्णिमा (रासोत्सवः)। कार्तिक स्नानारम्भः

वल्लभाब्द ५३५	**कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	३०	इष्टिः
२	बुध	३१	
३	गुरू	१	नवम्बर,
३	शुक्र	२	
४	शनि	३	
५	रवि	४	
६	सोम	५	
७	मंगल	६	
८	बुध	७	
९	गुरू	८	
१०	शुक्र	९	
११	शनि	१०	रमा एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	११	
१३	सोम	१२	धनतेरस।
१४	मंगल	१३	रूप चतुर्दशी (अभ्यंग) दीपोत्सव (दीपावली) हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्) कान जगाई।

वल्लभाब्द ५३५	**कार्तिक शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	१४	इष्टिः। अन्नकूटोत्सवः। गोवर्द्धनपूजा। गुर्जराणां २०६९ वर्षारम्भः।
२	गुरू	१५	यम द्वितीया।
३	शुक्र	१६	
४	शनि	१७	
५	रवि	१८	
६	सोम	१९	
७	मंगल	२०	श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव गो. ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत। (२०६३)
८	बुध	२१	गोपाष्टमी।
९	गुरू	२२	अक्षय नवमी। कृत युगादि कूष्माण्डदानम्।
१०	शुक्र	२३	
११	शनि	२४	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं सायं सन्ध्या में।
१२	रवि	२५	श्री गुसांईजी के प्रथम लालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५९७) तथा पंचमलालजी श्री रघुनाथजी को उत्सव। (१६११)
१३	सोम	२६	
१४	मंगल	२७	ति.श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१८७६)
१५	बुध	२८	चार स्वरूप को उत्सव। नित्यलीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत। चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्ति। गोपमासारम्भः। मांद्य चन्द्रग्रहण भारतवर्ष में दृश्य निर्णय पृ. ३१

वल्लभाब्द ५३५	**मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरू	२९	इष्टिः।(व्रतचर्या) अथवा गोपमासारम्भः।
२	शुक्र	३०	
३	शनि	१	दिसम्बर,
४	रवि	२	छः स्वरूप को उत्सव तिलकायित श्री दाऊजी महाराज कृत।
५	सोम	३	
५	मंगल	४	
६	बुध	५	
७	गुरू	६	गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज को उत्सव।(१९८४)
८	शुक्र	७	श्री गुसांईजी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव। (१५९९)
९	शनि	८	
११	रवि	९	
१२	सोम	१०	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्।श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निज मन्दिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत (२०६३)
१३	मंगल	११	श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (१६२८)
१४	बुध	१२	
३०	गुरू	१३	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३५	**मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	१४	
३	शनि	१५	धनुर्मासारम्भः
४	रवि	१६	
५	सोम	१७	श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सवः।
६	मंगल	१८	
७	बुध	१९	श्री गुसांईजी के चतुर्थलालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८)
८	गुरू	२०	सात स्वरूप को उत्सव श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज कृत।
९	शुक्र	२१	श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई।
१०	शनि	२२	
११	रवि	२३	
१२	सोम	२४	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	२५	
१३	बुध	२६	
१४	गुरू	२७	
१५	शुक्र	२८	छप्पन भोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है। गोपमास समाप्ति।

वल्लभाब्द ५३५	**पौष (गु. मार्गशीर्ष) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	२९	इष्टिः। नित्यलीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव। (२००५)
२	रवि	३०	
३	सोम	३१	
४	मंगल	१	जनवरी सन् २०१३ को प्रारम्भः
५	बुध	२	
६	गुरू	३	
७	शुक्र	४	श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव। (१६२५)
८	शनि	५	
९	रवि	६	श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्टलनाथजी को उत्सव। (१५७२)
१०	सोम	७	
११	मंगल	८	सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव। (१७६९)
१२	बुध	९	
१३	गुरू	१०	
३०	शुक्र	११	गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) महाराज के पुत्र **चि.गो.श्री भूपेश कुमारजी (श्री विशाल बावा)** को जन्मदिन। (२०३७)

वल्लभाब्द ५३५	**पौष शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	१२	इष्टिः।
२	रवि	१३	भोगी, धनुर्मास समाप्ति।
३	सोम	१४	मकर संक्रान्ति। तिलवा गोपी वल्लभ में ता पीछे दान श्राद्धादि करने। अब के यह संक्रान्ति ३ सोम कूं प्रातः ७ बजे बैठे है। तासूं पुण्यकाल आज सूर्योदय सूं लेके दिन के ३ बजके २३ मिनिट पर्यन्त है। तामे भी सूर्योदय के पास के २ घण्टा अति मुख्य पुण्यकाल है। उत्तरायण।
४	मंगल	१५	
५	बुध	१६	
६	गुरू	१७	नित्यलीलास्थ गो.श्री १०८ श्री दामोदरलालजी महाराज को उत्सव। (१९५३)
७	शुक्र	१८	
८	शनि	१९	
९	रवि	२०	
१०	सोम	२१	
११	मंगल	२२	पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	२३	
१३	गुरू	२४	
१४	शुक्र	२५	
१४	शनि	२६	
१५	रवि	२७	माघ स्नानारम्भः। इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३५	माघ (गु. पौष) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	२८	
२	मंगल	२९	
३	बुध	३०	
४	गुरू	३१	
५	शुक्र	१	फरवरी
६	शनि	२	
७	रवि	३	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव। (१७११) अष्टमी को क्षय होयवे सूं आज।
९	सोम	४	
१०	मंगल	५	
११	बुध	६	षट्तिला एकादशी व्रतम्। तिलकी वस्तु अवश्य भोग धरनो तिल के दान भक्षणादि करने।
१२	गुरू	७	
१३	शुक्र	८	
१४	शनि	९	
३०	रवि	१०	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५३५	**माघ शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	११	
२	मंगल	१२	
३	बुध	१३	
४	गुरू	१४	श्री मुकुन्दरायजी को पाटोत्सव।
५	शुक्र	१५	बसन्त पंचमी।
६.	शनि	१६	
७	रवि	१७	
८	सोम	१८	
९	मंगल	१९	
१०	बुध	२०	
११	गुरू	२१	जया एकादशी व्रतम्।
१२	शुक्र	२२	
१३	शनि	२३	
१४	रवि	२४	
१५	सोम	२५	माघ स्नान समाप्तिः। होरीडांडो दण्डारोपणं आज सूर्यास्तानन्तरं सायं ६ बजके ३४ मिनिट के पश्चात् यही समय धमार को आरम्भ। रोपणी को उत्सव।

वल्लभाब्द ५३५	**फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	२६	इष्टिः।
२	बुध	२७	
३	गुरू	२८	
४	शुक्र	१	मार्च,
५	शनि	२	
६	रवि	३	
७	सोम	४	श्रीनाथजी का पाटोत्सवः।
८	मंगल	५	
९	बुध	६	
१०	गुरू	७	
११	शुक्र	८	विजया एकादशी व्रतम्।
१३	शनि	९	
१४	रवि	१०	
३०	सोम	११	सोमवती अमावस।

वल्लभाब्द ५३५	**फाल्गुन शुक्लपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	१२	इष्टिः।
२	बुध	१३	
३	गुरू	१४	
४	शुक्र	१५	
५	शनि	१६	
६	रवि	१७	
६	सोम	१८	
७	मंगल	१९	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। गोस्वामि तिलकायित १०८ **श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी)** महाराज श्री को जन्मदिन।(२००६)
८	बुध	२०	होलिकाष्टकारम्भः।
९	गुरू	२१	
१०	शुक्र	२२	
११	शनि	२३	आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	२४	
१३	सोम	२५	
१४	मंगल	२६	होली होलिका प्रदीपनं पूर्णिमा बुध के सूर्योदय प्रातः ६ बजके ३३ मिनट पूर्व।
१५	बुध	२७	धूलिवन्दन (धुरेण्डी)। दोलोत्सव (डोल) ।

वल्लभाब्द ५३५	**चैत्र (गु. फाल्गुन) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०६९
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरू	२८	इष्टिः। द्वितीया पाट।
२	शुक्र	२९	
३	शनि	३०	
५	रवि	३१	
६	सोम	१	अप्रेल
७	मंगल	२	
८	बुध	३	
९	गुरू	४	
१०	शुक्र	५	
११	शनि	६	पाप मोचिनी एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	७	
१३	सोम	८	
१४	मंगल	९	
३०	बुध	१०	वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्।

।।श्रीहरिः।।

अधिक मास में नित्य अथवा पूर्वोक्त दिनन मे पूवा ३३ अथवा पक्वान्न कांस्य के पात्र में धरि के दक्षिणा सहित देने बने तो घृत सुवर्ण तथा वस्त्र हूं संग देने ताको संकल्प आचमन प्राणायाम करके करनो। विष्णुर्विष्णु विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरूषस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रर्वतमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तेक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे एकोनसप्तत्युत्तर अधिक द्वि सहस्त्रसंख्याके विश्वावसु नाम्नि विक्रमाब्दे चतुस्त्रिंशदोत्तरैकोन विंशतितमे नन्दनाम्नि शकाब्दे (नर्मदा के दक्षिण तीर सूं लेके शालिवाहन शके श्री नन्दन नाम्नि संवत्सरे ऐसे कहनो) दक्षिणायने वर्षा-शरद ऋतौ अधिक भाद्रपदे पुरुषोत्तम मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरान्वितायाममुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुककरणे अमुक राशि स्थिते श्री चन्द्रे सिंह राशि स्थिते श्री सूर्ये वृषभ राशि स्थिते श्री देव गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्वेवं ग्रहगण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम वर्ष त्रयोपार्जित कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक समस्त पापक्षयार्थं पुराणोक्तं शुभफल प्राप्तयर्थ श्री गोपीजनवल्लभप्रीत्यर्थ मिमांस्त्रयस्त्रिंशद् पूपान् विष्णुवादि श्री पत्यन्त त्रयस्त्रिंशद देवतान् श्री पुरुषोतम देवतान् कांस्यपात्र स्थितान् सघृतान् सहिरण्यान् सवस्त्रान् स दक्षिणाकान् यथानाम गौत्राय यस्मै कस्मैचिद् ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये तेन पुण्येन भगवान् सर्वात्मा श्री गोपीजन वल्लभः प्रीयताम् । अपूप के ठिकाने पक्वान्न होय तो अपूपस्थानापन्न पक्वान्नानि एसे कहनों और घृत हिरण्य वस्त्रन में सूं जो न होय ताको नाम उच्चारण न करनो ।

विष्णुरूपी सहस्त्राशुः सर्वपाप प्रणाशनः ।
अपूपान्न प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ।।१।।
नारायणं जगद्बीज भास्कर प्रतिरूपधृक् ।
दानेनानेन पुत्रांश्च सम्पदं चाभिवर्द्धय ।।२।।
यस्य हस्ते गदाचक्रे गरूड़ो यस्य वाहनः ।
शंङ्ख करतले यस्य समे विष्णुः प्रसीदतु ।।३।।
कला काष्ठादिरूपेण निमेषघटिका दिना ।
यो वञ्चयति भूतानि तस्मै कलात्मने नमः ।।४।।
कुरूक्षेत्र समो देशः कालः पर्व द्विजो हरिः।
पृथ्वी सममिदं दानं गृहाण पुरूषोत्तमः ।।५।।
मलानां च विशुद्धयर्थं पाप प्रशमनाय च ।
पुत्र पौत्रादि वृद्ध्यर्थं तव दास्यामि भास्कर ।।६।।
पुरूषोत्तम मास के स्नान दानादिं नियम नित्य
न बन सके तो हूं वदि ११ बुधवार सूं ३०
रविवार पर्यन्त ५ दिन अवश्य करनो चाहिये ।
इति शुभम् ।

श्राद्धपक्ष को निर्णय

आश्विन (गु. भाद्रपद) कृष्णपक्ष ।

भाद्रपद शुक्ल १५ रविवार के दिन प्रतिपदा को श्राद्ध, १ सोम कूं, २ को श्राद्ध, २ मंगल कूं ३ को श्राद्ध, ४ गुरू से लेकर आश्विन शुक्ल १ मंगलवार तक सब श्राद्ध तिथि प्रमाणे करने । जाकी मरण तिथि पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो ।

भाद्रपद की पूर्णिमा श्राद्ध पक्ष में नही है। ३ बुधवार के दिन भरणी नक्षत्र है तासूं पिण्ड रहित श्राद्ध करिवे सूं गया श्राद्ध जैसो फल लिख्यो है ५ शुक्र एवं ६ शनि के दिन श्राद्ध समय व्यतीतपात भी है तासूं ये दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है तासूं कोई भी तिथि को श्राद्ध रही गयो होय या रहि जायवे को संभव होय तो इन दिनन में श्राद्ध करनो। ६ मंगल के दिन मातृनवमी के श्राद्ध माता प्रभृति सुवासिनी मृत भई होय तो एवाती सुवासिनी भी अवश्य जिमावनी १२ शुक्र के दिन सन्यासीन को महालय श्राद्ध या ही दिन श्राद्ध समय मघा नक्षत्र भी है तासूं मघा निमित्त श्राद्ध अवश्य करनो चाहिए। जो न बन सके तो सर्व पितृगण के नामोच्चारण पूर्वक एक संकल्प करके ब्राह्मण भोजन अवश्य ही करवानो। क्योंकि जो श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन कछु भी न करें ता कूं दोष लिख्यो है।

१४ रवि कूं चतुर्दशी निमित्तक घायलन के श्राद्ध, जल शास्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही या दिन श्राद्ध, जाकी मरण तिथि चतुर्दशी होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या व्यतीपात या मे सूं कोई भी दिन में करनो । ३० सोम कूं सर्वपितृ अमावस्या एवं सोमवती अमावस्या तथा आश्विन शुक्ल १ मंगल कूं मातामह श्राद्ध ।

श्राद्धपक्ष को संकल्प

ऊँ विष्णुः ३ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशति तम कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जंबूद्वीपे भारत वर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे विश्वावसु नाम्नि एकोनसप्तत्युत्तर अधिक द्विसहस्त्र संख्याके वैक्रमाब्दे शकानुसारेण नन्दननाम संवत्सरे शरदृतौ आश्विन मासे (गुर्जर भाद्रपद मासे) कृष्णपक्षे अमुक तिथौ वासरान्वितायां नक्षत्र योगे-करणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, कन्या राशि स्थिते सूर्ये वृषभ राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थानस्थितेषु सत्स्वेवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम (नाम सम्बन्धोच्चारणं) एतेषां यथानाम् गौत्र रूपाणां पुरुष विषये सपत्नीकानां स्त्री विषये सभर्तृक सापत्या विधिनामहालयापर पक्ष श्राद्धमथवा सकृन्महालया पर पक्ष श्राद्ध सदैवं सद्यः करिष्येः

इति श्राद्ध पक्ष निर्णय समाप्त।

ग्रहण निर्णय

१. ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या रविवार दिनांक २०.५.१२ को ग्रस्तोदित सूर्यग्रहण भारतवर्ष के पूर्वी भाग में दृश्य राजस्थान, गुजरात महाराष्ट्र दिल्ली आदि राज्यों में अदृश्य अतः जहां दृश्य हो वहीं वेधादि नियम मान्य है।

२. कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा बुधवार दिनांक २८.११.१२ को भारतवर्ष में मांद्य चन्द्रग्रहण दिखाई देगा। अतः इसका वेधादि नियम मान्य नहीं है।

गणितकर्त्ता :
त्रिपाठी राजेश्वर यदुन्दन जी शास्त्री
दूरभाष ०२९५३ २३०४८५
मो. ९४१४४७३०१६

।।श्रीहरिः।।

भगवदावतार और उनके कार्य

भगवान् के अवतार अनेक प्रकार के होते हैं उन्हें मुख्य रूप से दो कोटि में रखा जा सकता है। एक पूर्णावतार और दूसरा अंशावतार श्रीराम और श्रीकृष्णके अतिरिक्त सभी अवतार अंशावतार में आ जाते हैं, इन्हीं में आचार्यावतार एवं आवेशावतार की भी गणना है। भगवान् ने श्रीगीताजी में अवतार के विषय में तीन श्लोक कहे है। उसमें 'अजोऽपिसन्नव्ययात्मा' इस छठे श्लोक में भगवान् ने अपने आर्विभाव का निरूपण किया है। मेरा जन्म प्राकृत मनुष्यों के समान नहीं होता मैं अविनाशी स्वरूप अजन्मा होने पर भी और सब प्राणियों का ईश्वर होने पर भी अपनी प्रकृति को अपने आधीन करके योग माया से प्रकट होता हूं। इसी प्रकार इसके आगे के श्लोक में 'यदायदा हि धर्मस्य' इस श्लोक में -हे भारत ! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब मैं अपने रूप को प्रकट करता हूं। इसमे आचार्यावतार का वर्णन किया है। धर्म की हानि का निवारण भगवान् आचार्यरूप से प्रकट होकर करते हैं। इसके आगे के श्लोक में 'परित्राणाय साधूनाम्' इसमें साधु पुरूषों का उद्धार करने के लिये और दूषित कर्मो को करने वालों का विनाश करने के लिये एंव धर्मस्थापन के लिये युग-युग में प्रकट होता हूं। इसमे भगवान् के अंशावतारों का वर्णन है। आचार्यावतार से तो केवल ध र्म की हानि को दूर करते है आचार्य का कार्य दुष्टों का विनाश करना नहीं है, यह कार्य तो अंशावतार का है।

जिस प्रकार अग्नि के अनेक रूप हैं उसी प्रकार भगवान् के अवतार के भी अनेक रूप हैं। अग्नि में खूब तपा कर अग्नि रूप बना हुआ लोहे का गोला भी अग्नि ही है और निकलती हुई ज्वाला भी अग्नि है परन्तु एक वह भी अग्नि है जो सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है सर्वत्र व्यापक अग्नि की तरह परब्रह्म पुरूषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण है। सूर्य की तरह भगवान् के अवतार है और तपे हुए लोहे के गोले की तरह आवेशावतार है। दुष्ट क्षत्रियों का जब तक विनाश करवाना था तब श्रीपरशुरामजी में भगवान् का आवेश रहा । जब वह कार्य पूर्ण हो गया । तब उनमें से आवेश हट गया। इस अवतार को आवेशावतार कहते है। अग्नि से निकलती हुई ज्वाला की तरह भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार है। श्रीकृष्णावतार को हम श्रीपुरूषोत्तम का आविर्भाव कहते हैं। व्यापक अग्नि का आविर्भाव ही जाज्वल्यमान ज्वाला है। उसी प्रकार सर्वशक्ति सहित श्री पुरूषोत्तम का आविर्भाव ही श्रीकृष्णावतार है।

यहां यदि शंका हो कि आप भगवान् का अवतार जब कहते है तो 'अवतरणमवतारः' उतरने को अवतार कहते है तो भगवान् किसी स्थान विशेष में रहते है, और वहां से जब यहां आते है तो उसे अवतार कहना होगा, तो फिर भगवान् सर्वत्र व्यापक नहीं रहे और यदि सब जगह विद्यमान है तो उनका उतरना आ आना जाना कैसे होता है। इसका समाधान इस प्रकार समझिये कि वायु सर्वत्र व्यापक है पर्वत के अन्दर गुफा में भी वायु है परन्तु हमे वहां वायु का अनुभव नहीं होता । वहीं पर आप पंखे का उपयोग करेंगे तो आपको वायु का प्रत्यक्ष ज्ञान हो जायेगा । वायु यदि नहीं थी तो आयी कहां से इसी प्रकार अग्नि भी सर्वत्र व्याप्त है उसका आविर्भाव सरलता से लकड़ी में हो सकता है। दो

लकड़ियों को आप रगड़िये उसमें से अग्नि आपको प्रत्यक्ष हो जायेगी । अग्नि तो सर्वत्र व्यापक है वह कहीं से आयी नहीं और जब उसका तिरोभाव हो जाता है तब वह अग्नि अपने ही व्यापक स्वरूप में रहती है। इसी प्रकार भगवान् तो सर्वत्र है परन्तु हमारी इन्द्रियों के ऊपर माया का आवरण है उस आवरण को जब प्रभु कृपा करके हटा देते है तो उसी व्यापक भगवान् का हमे प्रत्यक्ष दर्शन होने लगता है। यह आवरण हमारी इन्द्रियों के ऊपर ही है भगवान् को तो कोई ढक ही नहीं सकता । जैसे बादल सूर्य और हमारे बीच व्यवधान कर देते हैं तो वह सूर्य हमें दिखाई नहीं देता। यहां बादल सूर्य को ढक नहीं सकता सूर्य तो महान् है अन्यत्र दिखता रहता है। इसी प्रकार हमारे और प्रभु के बीच में जो आवरण है उसे जब प्रभु कृपा करके हटा देते हैं तब हमें प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन होने लगते है अतः हमें प्रभु से यही प्रार्थना करनी चाहिये कि प्रभो हमारी इन्द्रियों के आवरण को आप दूर करें। जिससे हम आपके दर्शन को प्राप्त कर सकें।

लेखक

त्रिपाठी यदुनन्दन नारायण जी शास्त्री

विद्याविभागाध्यक्ष

विद्याविभाग मन्दिर मण्डल नाथद्वारा (राज.)

दूरभाष ०२९५३ २३०४८५

वर्त्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरभाषानुसार सूचना

श्री नाथद्वारा

फाल्गुन शु. ७
गोस्वामि तिलकायित श्री १०८
श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) महाराजश्री
श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) के लालजी १
मार्ग. कृ. ३० चि. गो. श्री भूपेशकुमारजी
(श्री विशाल बावा)

आषा. कृ. १३ गो. कल्याणरायजी
गो. कल्याणरायजी के लालजी २

पौ.कृ. ६ चि. श्रीहरिरायजी

अश्विन शु. ६ चि. श्रीवागधीशजी

चि. हरिरायजी के लालजी २
माघ शु. १३ चि. श्री वदान्य राय जी (श्री गिरधर जी)

फा. शु. ३ चि. द्विजराज जी

पौष शु. ५ गो. श्री गोकुलोत्सवजी
श्रीगोकुलोत्सवजी के लालजी १

फा.शु. ४ चि. श्री अभिनवाचार्यजी (श्रीव्रजोत्सवजी)

चि. अभिनवाचार्य जी के लालजी १

वै.शु. १२ चि. व्रजेश्वरजी (श्रीउमंगजी)

आ.शु. १४ गो. देवेन्द्रकुमारजी
श्रीदेवेन्द्रकुमारजी के लालजी १
वै.कृ. ४ चि. दिव्येशजी

कांकरोली

पौ.शु. १० गो. श्रीवृजेशकुमारजी

चै.कृ. ४ गो. पीताम्बरजी

वै.कृ. ६ गो. त्रिलोकीभूषणजी

श्रीव्रजेशकुमारजी के लालजी २
ज्ये.शु. ५ चि. पुरूषोत्तमजी

फा.कृ. ४ चि. द्वारकेशजी

श्रीपीताम्बरजी के लालजी १
ज्ये. शु १४ चि. व्रजालंकारजी

गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
वै.कृ. १३ गो. चि. व्रजाभरणजी

श्रीपुरूषोत्तमजी के लालजी २

का. कृ. ६ गो. श्रीव्रजभूषणजी

का. शु. १० गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी

आ. सु. ६ गो. रविकुमारजी
गो. रविकुमारजी के लालजी २

श्रा. ३० चि. अवतंस बावा
(मधुरम जी)

माघ व. ४ चि. प्रियम बावा

कोटा-बम्बई जतीपुरा

ज्ये. कृ ६ गो. लालमणीजी
लालमणीजी के लालजी २

श्रा.शु. ६ चि. गो. श्रीप्रभुजी
(मिलनकुमारजी)

चै. शु. ६ चि. द्वारकेशलालजी

श्री मिलनकुमारजी के लालजी १

श्रा.कृ.२ चि. रणछोड़ लालजी
(कृष्णास्थ बावा)

कोटा-कड़ी

चै.शु. १० गो. गोपाललालजी

गोविन्दरायजी के लालजी

मा.कृ. ६ चि. व्रजेशकुमारजी

माघ.व. १० गो. चि. घनश्यामलालजी

आसो. सु. १० गो. दामोदरलालजी

चै. व. १२ गो. चि. वल्लभलालजी
गो. वल्लभलालजी के लालजी १

आषा. सु. ८ चि. पुरूषोत्तमजी

घनश्यामलालजी के लालजी २

फा.शु. ७ गो.चि. कृष्णकुमारजी
गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी १

पौ.व. ११ गो.चि. व्रजपाललालजी

फा.शु. ११ चि. कुंजेशकुमारजी
गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी २

मार्ग.व. २ गो.चि. गोविन्दरायजी

आश्वि.व. ३ गो.चि. गोकुलमणीजी

गो. गोपाललाजी के लालजी २
आसो. व. ३ चि. विनयकुमारजी

आषा. व. ४ चि. शरदकुमारजी

श्रा.सु. ७ गो. त्रिलोकीभूषणजी
त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १

ज्ये.कृ. १ राजीवलोचनजी

व्रजेशकुमारजी के लालजी ३

चै.शु. ६ चि यदुनाथजी
चि. यदुनाथजी के लालजी १
पौ.कृ. ५ चि. प्रद्युम्नजी

कार्ति. सु. १० चि. द्वारकेशजी

कार्ति सु. ७ चि. जयदेवजी
चि. जयदेवजी के लालजी १

मार्ग कृ. १३ चि. व्रजराजजी

चि. दामोदरलालजी के लालजी २
श्रा. व. १२ चि. हरिरायजी

ज्ये.व. १० चि दर्शन कुमारजी

कामवन

फा. सु. २ गो. श्री वल्लभलालजी
गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी २

भा. कृ. २ चि. श्री देवकीनंदनजी

श्रा. कृ. १० चि. श्री विट्ठलनाथजी

कामवन/सूरत

आ. कृ. १४ गो. श्री द्वारकेशलालजी
गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी २

फा. शु. ३ चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रा. कृ. १३ चि. श्री कन्हैयालालजी

च. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी २
भा. कृ. ४ चि. श्री गोविन्दजी

का. शु. ७ चि. श्री गोकुलचन्द्र जी

चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी १
का. शु. १० चि. श्री जयदेवजी

कामनवन/भावनगर

भा. शु. १ गो. श्री नवनीतलालजी

गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी १
का. शु. १ चि. श्री गोकुलेशजी

कामवन/घाटकोपर

का. कृ. ११ गो. मुरलीधर जी
गो. मुरलीधरलालजी के लालजी १

मार्ग. शु. ४ चि. श्री जयदेवलालजी

चै. कृ. १३ गो. श्री रघुनाथलालजी
गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी २

मार्ग. शु. ६ चि. श्री गिरधरजी

श्रा. कृ. ५ चि. श्री दामोदर जी,

कामवन

माघ. सु. १३ गो. घनश्यामजी

चै. सु. १५ गो. रघुनाथलालजी (गोकुल-मुम्बई)
गो. घनश्यामजी के लालजी ३

आष.सु. ११ चि. ब्रजेशकुमारजी

श्रा. व. ३ चि. गोपाललालजी

आसो. व १२ चि. कल्याणरायजी

गो. रघुनाथजी के लालजी १

माघ. सु. ४ चि. योगेशकुमारजी
चि. योगेशकुमारजी के लालजी २

आ. व. १३ चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रा. कृ. ३० चि. व्रजपालजी (मुदितजी)

भा.सु. १४ गो. शिशिरकुमारजी

गो. चि. गोपालजी के लालजी १
आसो. व. ४ चि. लालजी

गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी २
श्रा. व. ३ गो. चि. अनिरूद्धजी

भा. व. १ गो. चि. उपेन्द्रजी

चि. अनिरूद्धजी के लाल जी १
फा. कृ. ६ चि. रमणजी (रसेश जी)

गोकुल

का. व. १० गो. देवकीनन्दनजी
गो. देवकीनन्दन के लालजी २

मा. व. ३० चि. वल्लभलालजी

का. सु. २ चि. विट्ठलनाथजी

वीरमगाम

आसो. व. १४ गो. जयदेवलालजी
गो. जयदेवलालजी के लालजी ३

ज्ये. सु. १ चि. मथुरेशजी
चि. मथुरेशजी के लालजी १
आसो. व. १४ चि. रघुनाथ जी

आसो. व. ६ चि. ब्रजेशकुमारजी
चि. ब्रजेशकुमार जी के लालजी १
माघ व. ६ चि. रसिकप्रितमजी

चि. कन्हैयालालजी के लालजी १
श्रा. व. ८ चि. श्रीगोकुलेशजी

सूरत

आषा. व. ४ गो. गोपेश्वरजी

गो. गोपेश्वरजी के लाल जी १

फाल्गु. व ६ चि. वत्सलराजजी

माघ. व ५ गो. कल्याणरायजी

मार्ग. सु. ११ गो. वल्लभलालजी

पौ. व. ३ गो. मुकुन्दरायजी

गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आसो. व. १ चि. अनुरागजी

बड़ोदरा, सूरत

चै. सु. ११ गो. मथुरेशजी

भा.व. ४ गो. चन्द्रगोपालजी

पौ. व. ५ गो. प्रभुजी

गो. मथुरेशजी के लालजी २
भा.सु. ६ चि. योगेशकुमारजी

भा.व. २ चि. द्रुमिलकुमारजी
गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी १

चि. व्रजराजकुमारजी

चापासेनी-जामनगर-नडियाद

मा. व. ३ गो. विट्ठलनाथजी

ज्ये. सु. ५ गो. हरिरायजी

फा. व. १४ गो. व्रजरत्नजी

पौष सु. ६ गो. नवनीतरायजी

आष. सु. गो. बालकृष्णजी

गो. चि. विट्ठलेशरायजी के लालजी ३

आषा. सु. १५ चि. मुकुट बावा

फा. व. १२ चि. शरदकुमारजी

फा. सु. १५ चि. उत्सवजी

चि. हरिरायजी के लालजी १
का. व. १२ चि. व्रजवल्लभजी

गो. व्रजरत्नजी के लालजी १
अश्वि. सु. ७ चि. गोकुलोत्सवजी

गो. नवनीतलालजी के लालजी १
ज्ये. सु. १० चि. अंजनरायजी

बालकृष्णजी के लालजी १
पौ. सु. १ चि. प्रियांकजी

मथुरा

पौ. व. ६ गो. प्राणवल्लभजी
गो.प्राणवल्लभलालजी के लालजी २

का. शुक्ल ११ चि. व्रजवल्लभजी

चै. वदी ११ चि. जयवल्लभ जी

चि. व्रजवल्लभजी के लालजी १
वै. कृ. ११ चि. कृतार्थ बावा

माघ सुदी ५ गो. रसिकवल्लभजी
गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी १

मृग शुक्ल ५ चि. समर्पण बावा

का. सु. ६ गो. अक्षयकुमारजी

आषा. सु. १४ गो. शरदकुमारजी
गो. शरदकुमारजी के लालजी ३

माघ. व ६ चि. गोपाललालजी

का.सु. ५ चि. व्रजभूषणलालजी

ज्ये. सु. ११ गो. प्रबोधकुमारजी
गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी १

भा. सु. ४ चि. रत्नेशकुमारजी

चि. प्रबोधकुमारजी के लालजी १
भा. सु. ८ चि. अभिषेक बावा

मार्ग. व. २ गो. संदीपकुमारजी

पौ. सु. ६ गो. संजयकुमार जी

गो. अक्षयकुमारजी के लालजी ३

आसो. सु. १ चि. प्रणयकुमारजी

प्रणयकुमारजी के लालजी २

फा.शु. १२ गो.चि. श्रीअलंकारजी

फा.शु. ७ गो.चि. वृजरायजी

पौ. व. ६ चि. परितोषकुमारजी

मार्ग. व. ८ चि. पंकजकुमारजी

वाराणसी

मार्ग. सु. २ श्याम मनोहरजी

गो. श्याममनोहरजी के लालजी १

मार्ग. कृ. ६ गो. चि. प्रियेन्दु बावा

अहमदाबाद

का.सु. १२ चि. व्रजेन्द्रकुमारजी

गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी २

आसो. व. १० चि. मधुसूदनलालजी
(तिलक बावा)

आश्वि. शु. १ गो.चि. रणछोड़लालजी
(आभरण बावा)

गो.चि. मधुसूदनलालजी

(तिलक बावा) के लालजी २

ज्ये.सु. २ गो. चि. व्रजरायजी (निवेदन बावा)

आ.व.१० गो.चि. व्रजेश्वरजी (आभुषणजी बावा)

मुम्बई

ज्ये. व. ६ गो. श्याममनोहरजी

आ. सु. ५ गो. मनमथराय जी

गो. गोपीनाथजी के लालजी २
का. व. १३ चि. रमेशचन्द्रजी
माघ. सु. ६ चि. अनिरूद्धलालजी (श्रीराजकुमारजी)

चि. रमेशचन्द्रजी के लालजी १
माघ. व. ६ गो. रघुनाथजी

गो. रघुनाथजी के लालजी २
भा. सु. ५ चि. गोपीनाथजी दिक्षीत जी (गो. राहुल जी)

मार्ग. सु. २ चि. नागरमोहनजी (चि. निवेद जी)

चि. अनिरूद्धजी के लालजी २
माघ. व. ६ चि. यदुनाथजी

फा. सु. १५ चि. गोकुलनाथजी

गो. माधवरायजी के लालजी १
मार्ग. व. ६ चि. नीरजकुमारजी

चि. नीरजकुमारजी के लालजी १
वै. व. १४ चि. गोविन्दरायजी

गो. कृष्णजीवनजी के लालजी ५
आसो. सु. ७ गो. हरिरायजी

पौ. व. ४ गो. मधूसुदन जी

फा. सु. १३ गो. मुरलीमनोहरजी

आषा. सु. २ गो. कृष्णकान्तजी

चि. कृष्णकान्त जी के लालजी १
श्रा. शु. ११ चि. गिरिधरलालजी

चै.सु. १४ गो. पुरूषोत्तमलालजी
गो. पुरूषोत्तमलालजी के लालजी २

मार्ग. सु. ४ चि. गोकुलनाथजी

आषा. सु. ११ चि. ललितत्रिभंगीजी

चि. ललितत्रिभंगीजी के लालजी १
फा. सु. ८ चि. व्रजवल्लभलालजी

गो. हरिरायजी के लालजी २
मार्ग व ४ चि. हृषीकेशजी

चि. हृषीकेशजी के लालजी २
आसो. सु. १ चि. राजीवलोचनजी

वै.सु. ७ रविरायजी

गो. द्वारकाधीशजी के लालजी २
वै. व. ४ चि. योगेशकुमारजी

चि. योगेशकुमारजी के लालजी १
भा. व. ३० चि. बालकृष्णलालजी
(मिथिलेशकुमारजी)

आसो. व. ४ चि. कमलेशकुमारजी
चि. कमलेशकुमारजी के लालजी १

फा. कृ. ६ चि. मुकुन्दरायजी

आसो. सु. १ गो. मनमोहनजी
मनमोहनजी के लालजी १

आ. व. १४ गो. चि. प्रियव्रतरायजी

आषा. ३० गो. हिरण्यगर्भजी
गो. हिरण्यगर्भजी के लाल जी १

आ. कृ. ११ चि. हैयंगवीनजी

गो. मधुदसूदनजी के लालजी २
चै.सु. १० चि. कृष्णचन्द्रजी

पौ. व. ५ चि. वल्लभदीक्षितजी

गो. मुरलीमनोहरजी के लालजी १

आसो. सु. ११ चि. गोपिकालंकारजी

कान्दीवली-मुम्बई

भा.सु. ८ गो. व्रजजीवनजी
गो. व्रजजीवन के लालजी २

ज्ये. सु. २ चि. द्वारकेशलालजी

कार्ति. सु. ७ चि. पुरूषोत्तमजी

मुम्बई विलेपार्ले

आसो. सु. ३ गो. रसिकवल्लभजी

चैत्र सुदि ६ गो. महेन्द्रकुमारजी

गो. रसिकवल्लभजी के लालजी १

आसो. सु. १३ चि. शिशिरकुमारजी
चि. शिशिरकुमारजी के लालजी १

पौ. कृ. ५ चि. मुरलीमनोहरजी

मुम्बई-वेरावल-पोरबन्दर

माघ. सु. ८ गो. माधवरायजी

मार्ग. सु. ६ गो. चन्द्रगोपालजी
गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १

श्रा. कृ. ६ चि. अनिरूद्धलालजी

आसो. व. १४ गो. शैलेशकुमारजी
श्रीशैलेशकुमारजी के लालजी १

श्रा. सु. ३ चि. लाडिलेशजी

गो. माधवरायजी के लालजी १
आषा. व. ४ चि. मुरलीधरजी

बोरीवली-जामखंभालिया

पौ. सु. १३ गो. वल्लभलालजी

श्रा. व. १३ गो. राकेशकुमारजी

गो. मुरलीधरजी के लालजी ३
का. व. १३ गो. त्रिभंगीलालजी

चै. व. ११ गो. व्रजप्रियजी

चै. व. १४ गो. यशोदानन्दन जी

गो. यशोदानन्दन जी के लालजी १
माघ व. १० चि. व्रजनाथलालजी
(श्री नुपुर कुमार जी)

गो. वल्लभलालजी के लालजी ३
वै. सु. १३ चि. राजीवलोचनजी

मार्ग. सु. २ चि. गोविन्दरायजी
चि. गोविन्दरायजी के लालजी १
श्रा. सु. २ चि. मधुसूदन जी
(चि. रूचिरबाबा)

ज्ये. सु. १५ चि. गोपिकालंकारजी
चि. गोपिकालंकारजी के लालजी १

फा. सु. २ चि. गो. द्वारकेशलालजी

गो. राजीवलोचनजी के लालजी ३

आषा. व. ५ चि. देवकीनन्दनजी
(भागवतकुमारजी)

चि. देवकीनन्दनजी के लालजी १

चै.व. ११ चि. गो. श्री दीक्षितजी
(चि. वेदांग बावा)

ज्ये. सु. ४ चि. कुंजरायजी
(योगीन्द्रकुमारजी)

श्रा. कृ. ३ चि. गो. गिरिधरजी

गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी १
का. सु. ३ चि. यमुनेशकुमारजी

जूनागढ

श्रा. व. ३ गो. दानीरायजी
गो. दानीरायजी के लालजी ४

श्रा. सु. १२ चि. गोकुलेशजी

का. सु. ५ चि. पुरूषोत्तमजी

आषा. सु. ११ चि. व्रजेन्द्रकुमारजी

चि. व्रजेन्द्रकुमारजी लालजी २

भा.व. १ चि. ब्रजनाथजी
(चि. शशांक बावा)

आश्वि. व. १३ चि. मधुरेशजी
(चि. मृदुल बावा)

का. शु. १५ चि. विशालकुमारजी

पूना-मद्रास

चै. सु. ४ गो. अजयकुमारजी

गो. अजयकुमारजी के लालजी १

भा. कृ. ६ चि. वागधीशकुमारजी

फा. व. ११ गो. भरतकुमारजी

गो. भरतकुमारजी के लालजी १

वै. व. २ चि. यशोवर्द्धन जी

मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै. सु. १४ गो. रणछोड़लालजी (राजकोट)

गो. रणछोड़लालजी के लालजी १

फा. कृ. १३ चि. गोकुलनाथजी

माघ. व. ६ गो. अनिरूद्धलालजी

गो. अनिरूद्धजी के लालजी १

वै. सु. १४ चि. रसिकरायजी (शरदजी)

चि. रसिकरायजी के लालजी १

श्रा. कृ. ७ चि. अचिन्त्य जी

आषा. सु. ८ गो. चिमनलालजी (गोकुल)

गो. चिमनलालजी के लालजी २

आ. कृ. ६ चि. चन्द्रगोपालजी (पंकज बावा)

का. सु. ४ चि. भूषणजी

चि. चन्द्रगोपालजी के लालजी २

का. सु. १२ चि. अन्वयजी

श्रा. सु. ५ चि. प्रत्यय जी

चि. भूषणजी के लालजी २

फा. कृ. ३ चि. अव्ययजी

का. सु. ८ चि. गोपालजी

वै. सु. ६ गो. किशोर चन्द्रजी (जूनागढ)

गो. किशोरचन्द्रजी के लालजी १

का. व. ४ चि. व्रजेन्द्रजी (पीयूष बावा)

चि. व्रजेन्द्रजी के लालजी २

का. कृ. २ चि. ब्रजवल्लभजी

पौ. कृ. ७ चि. पुण्यश्लोकजी

पौ. सु. १२ गो. विट्ठलनाथजी (मुम्बई)

आश्विन कृ. ७ गो. श्री सांरगजी (बडोदरा)

गो. श्री सारंगजी के लालजी १

फा.सु. १४ चि. घनश्यामलालजी (उत्सव बावा)

पोरबन्दर

वै. सु. ७ गो. हरिरायजी

हरिरायजी के लालजी १

मा. शु. ११ चि. जयगोपालजी

मथुरा-पोरबन्दर

मार्ग. व. १० गो. रसिकरायजी

आ. सु. १२ गो. मथुरेशकुमारजी

आसो. व १० गो. कन्हैयालालजी

पौ.सु.६ गो.जयदेवलालजी

गो. रसिकरायजी के लालजी २

वै. व. १० चि. चन्द्रगोपालजी

वै. व. ७ चि. शरदकुमारजी

गो. मथुरेशकुमारजी के लालजी २

माघ. व. १२ चि. वसन्तकुमारजी

का. सु. ६ चि. विशालकुमारजी

गो. कन्हैयालालजी के लालजी २

फा. कृ. ५ चि. अभिषेककुमारजी

वै. शु. ३ चि. अक्षयकुमारजी

गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १

आषा. सु. ७ चि. मिलनकुमारजी

चि. मिलनकुमारजी के लालजी १

मार्ग शु. ८ चि. गोकुलनाथजी

लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की सूचना

वै. सु. ३ श्रीदेवकीनन्दनजी कामवन

वै. व. ११ श्रीदेवकीनन्दनजी इन्दौर

वै. व. १२ श्रीदीक्षितजी बम्बई

वै. व. १४ श्रीविट्ठलेशरायजी पोर.

ज्ये. सु. ६ श्रीगिरधरजी कोटा

जये. सु. १२ श्रीद्वारकेशलालजी कोटा

ज्ये. सु. १५ श्रीजीवनलालजी काशी

ज्ये. व. ८ श्रीघनश्यामलालजी मांडवी

ज्ये. व. १४ श्रीवागधीशजी अमरेली

आ. सु. ३ श्रीवल्लभलालजी कामवन

भा. सु. ७ श्रीव्रजरत्नलालजी सूरत

फा. शु. १५ श्रीमाधवरायजी पोर.

का. व. ७ श्रीगोविन्दलालजी नाथद्वारा

आ. व. ८ श्रीघनश्यामलालजी कामवन

आ. व. १२ श्रीविट्ठलेशरायजी बम्बई

वै. व. १ श्रीद्वारकेशजी पोरबन्दर

आ. व. १ श्रीगोकुलेशरायजी जूनागढ़

आ. व. ८ श्रीयदुनाथजी सूरत

आ. व. १० श्रीव्रजरत्नलालजी नडियाद

आ. व. १३ श्रीबालकृष्णजी कांकरोली

आ. व. १३ श्रीकृष्णरायजी इन्दौर

आ. व. १३ श्रीगोकुलेशजी बम्बई

आ. सु. ३ श्रीदामोदरलालजी चापां

भा. वं. १ श्रीगोवर्द्धनलालजी नाथद्वारा

माघ व. २ श्रीव्रजभूषणलालजी कांक

फा. व. ५ श्रीचिम्मनलाल जी बम्बई

मा. व. ३० श्रीगोविन्दरायजी पोर.

मा. कृ. १ श्रीदाऊजी (राजीवजी) नाथद्वारा

श्रा. व. १४ श्रीगोपाललालजी कांकरोली

भा. व. ८ श्रीमुरलीधरजी बेटद्वार

श्रा. व. ८ श्रीकन्हैयालालजी गोकुल

भा. व. १० श्रीव्रजनाथजी विलेपार्ले

का. सु. १४ श्रीजीवनलालजी कोटा

भा. व. ७ श्रीवल्लभलालजी बड़ौदा

भा. व. ८ श्रीमुरलीधरजी कोटा

भ. व. ११ श्रीनृसिंहलाल जी शेरगढ़

आ. सु. १३ श्रीरघुनाथजी जूनागढ़

आ. व. ३ श्रीघनश्यामलालजी बम्बई

आ. व. ५ श्रीव्रजनाथजी जामनगर

आ. व. ६ श्रीमगनलालजी सूरत

आ. व. १३ श्रीव्रजपाललालजी मथुरा

का. व. २ श्रीपुरूषोत्तमलालजी जूना

का. सु. ६ श्रीपुरूषोत्तमलालजी अमरे	फा. व. १३ श्रीव्रजरायजी अहमदाबाद
का. सु. ७ श्रीलालमणिजी कोटा	श्रा. व. ६ श्रीकृष्णजीवनजी
का. सु. ८ श्रीगोपाललालजी मथुरा	माघ. व. २ श्री नटवरलालजी
फा. सु. ८ श्रीरमणजी कामवन	का. सु. १ श्रीरमणलालजी मथुरा
आ. सु. ३ श्रीगोपालालजी कांकरोली	श्रा. सु. १२ श्रीविट्ठलेशरायजी चापा
का. व. १४ श्रीजयदेवजी वीरमगाम	श्रा. सु. ३० श्रीकन्हैयालालजी बम्बई
मार्ग सु. १३ श्रीगिरधरलालजी नाथ	भा. सु. १२ श्रीगोकुलनाथजी बम्बई
ज्ये. सु. ५ श्रीजीवनजी बम्बई	भा. सु. १२ श्रीअनिरूद्धलालजी नडियाद
ज्ये. सु. ११ श्रीकल्याणरायजी मथुरा	भा. व. ३ श्रीगोवर्द्धनलालजी बम्बई
ज्ये. सु. १३ श्रीजीवनलालजी पोर	भा. व. ३ श्रीदामोदरलालजी मथुरा
ज्ये. सु. १४ श्रीद्वारकेशलालजी बम्बई	भा. व. ७ श्रीघनश्यामलालजी सूरत
श्रा. व. ७ श्रीरणछोड़लालजी बम्बई	वै. कृ. ५ श्रीरणछोड़लालजी कोटा
पौ. सु. ५ श्रीगोपेश्वरलालजी नाथद्वारा	वै. व. १२ श्रीब्रजरमणलालजी मथुरा
पौ. सु. ६ श्रीदामोदरलालजी नाथद्वारा	भा. कृ. १२ श्रीगोविन्दरायजी कोटा
पौ. सु. ७ श्रीरणछोड़लालजी कोटा	का. सु. १३ श्रीगोविन्दरायजी कामवन
पौ. व. ११ श्रीरणछोड़लालार्जी राज	पौ. व. १२ श्रीव्रजभूषणलालजी नड़ि
पौ. व. ६ श्रीवल्लभलालजी बम्बई	आसो व. १० श्री व्रजरायजी (नटवरगोपालजी) अहमदाबाद
का. सु. ४ श्रीमधुसूदनलालजी अमरे	श्रा. सु. ११ श्रीगिरधारीलालजी मु.
का. सु. १० श्रीगोकुलाधीशजी बम्बई	चै. सु. १५ श्रीमुरलीधरलालजी बोरी.
का. सु. १५ श्रीगिरधरलालजी काशी	वै. सु. ११ श्रीयदुनाथरायजी जती.
श्रा. व. १२ श्रीप्रद्युम्नलालजी वेटद्वार	वै. व. ३० श्रीवागीशरणजी बम्बई
फा. सु. ३ श्रीगिरधरजी सूरत	आषा. सु. २ श्रीगोपाललालजी कामवन
फा. सु. ११ श्रीगोविन्दरायजी सूरत	

आषा. सु. २ श्रीमगनलालजी वेरावल

श्रा. सु. २ श्रीवल्लभलालजी बम्बई

श्रा. व. ३० श्रीकन्हैयालालजी बम्बई

भा. सु. ४ श्रीपुरूषोत्तमलालजी चापा

का. सु. १ श्रीगोवर्द्धनेशजी बम्बई

का. सु. ३ श्रीप्रदीपकुमारजी मथुरा

का. सु. ११ श्रीश्यामसुन्दरजी बम्बई

भा. सु. १० श्रीदामोदरलालजी बम्बई

भा. सु. ११ श्रीव्रजवल्लभजी जूना

भा. सु. १३ श्रीपुरूषोत्तमलालजी को.

पौ. सु. ४ श्रीगोकुलनाथजी वेरावल

फा. सु. १२ श्रीकाकागिरधरजी नाथ.

भा. सु. ६ श्रीपुरूषोत्तमलालजी चापा

पौ. सु. १० श्रीकल्याणरायजी बम्बई

चै. सु. १३ श्रीमुरलीधरजी काशी

ज्ये. सु. ४ श्रीत्रिविक्रमरायजी कोटा

आषा. सु. ३ श्रीमथुरेशजी मुम्बई

वै. सु. १५ श्रीमाधवरायजी मुम्बई

भा. व. १ श्रीमदनमोहनजी मुम्बई

आषा. व. ३ श्रीनटवरगोपालजी (मु.-वेरावल - पोरबन्दर)

ज्ये. व. ४ श्रीगिरधरलालजी कामवन

फा. सु. १४ श्रीमधुसुदनलालजी सूरत

आष.व. ११ श्रीबालकृष्णलालजी सूरत

पौ.व. ६ श्रीविट्ठलनाथजी मथुरा

फा. व. ३० श्रीकृष्णचन्द्रजी मुम्बई

का. सु. ७ श्रीजीवनेशजी मुम्बई

वै. व. १४ श्रीव्रजाधीशजी मुम्बई

आ. सु. ५ श्रीविट्ठलेशरायजी कां. मुम्बई

का. व. ८ श्रीराजेन्द्रकुमारजी मथुरा

आषा. व. ११ श्रीविट्ठलेशरायजी इन्दौर

आसौ. सु. ११ श्रीकृष्णकुमारजी कामवन

माघ सु. ४ श्रीकृष्णकुमारजी मथुरा

माघ वदी ४ श्रीनृत्यगोपालजी मुम्बई

मार्ग. सु. १४ श्रीद्वारकेशलालजी मांडवी

माघ. कृ. २ श्रीनटवरलालजी मांडवी

वै. सु. १० श्रीमुरलीमनोहरजी बडोदरा

आ. सु. ५ श्रीदामोदरलालजी राजकोट

ज्ये. सु. ८ श्रीमुकुन्दरायजी राजकोट

वै. सु. ६ श्रीयदुनाथजी मथुरा

का.व. १० उत्तमश्लोकजी मुम्बई

फा.सु. ४ गोकुलनाथजी गोकुल

आषाढ़ व. ८ रसिकरायजी चापासेनी -जामनगर-नडियाद